ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December- 2017
Innovation The Research Concept

छत्तीसगढ़ बेसिन की चित्रकूट में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्याएँ एवं संभावनाएँ

राजबहादुर अनुरागी
सहायक प्राध्यापक,
सामान्य एवं व्यावहारिक भूगोल विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि.,
सागर ,म.प्र.

सारांश

चित्रकूट एक विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। यह जितना पवित्र है उतना समृद्ध भी है। भगवान राम एवं उनके जीवन से जुड़ी सारी कहानियों का वर्णन विभिन्न पत्थरों पर उकेरी गई नक्कासियों एवं स्थापित मूर्तियों से सदृश्य लगाया जा सकता है। यह स्थल प्राचीन समय से जैव विविधता एवं पारिस्थितिकी दृष्टि से सम्पन्न रहा है। सांस्कृतिक, धार्मिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से परिपूर्ण यह स्थल त्रिस्तरीय पर्यटन का अद्भुत संगम है। वन एवं वन उत्पाद यहाँ के निवासियों का भोजन एवं रोजगार का माध्यम अभी भी बने हुए हैं। विगत कुछ वर्षो से पारिस्थितिकीय तत्वों पर मानवीय हस्तक्षेप प्रभावी हो रहा है। जिससे इन तत्वों का दायरा अब सिमिटता जा रहा है। जिनका समय रहते प्रबंधन एवं संरक्षण नहीं किया गया, तो प्राकृतिक खूबसूरती पर खतरा संभावित है। एक शोधार्थी होने की दृष्टि से, इस स्थल को एक पारिस्थितिकी पर्यटन के रूप में विकसित करने की जरूरत है। क्योंकि पारि–पर्यटन सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक तीनों तत्वों के संरक्षण पर बल देता है। पारिस्थितिकी पर्यटन की परिभाषा उक्त तीनों तत्वों को बिना छुए उनको सुरक्षित एवं विकसित करने की पक्षधर है, इसके साथ ही यहाँ के क्षमतावान स्थलों का भू–विन्यास, जैवीय एवं पारिस्थितिकीय तारतम्य विकसित कर आपेक्षित परिवर्तन के साथ ही पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : चित्रकूट पारिस्थितिकी पर्यटन, कामदगिरि–परिक्रमा, पारिस्थितिकी–परिदृश्य, रमणीय–रामघाट।

प्रस्तावना

पारिस्थितिकी पर्यटन क्या है?

पारिस्थितिकी पर्यटन विश्व परिदृश्य पर बड़ी तेजी से उभरता हुआ नवीन विकसित स्वरूप है। इसका सबसे महत्वपूर्ण लाभ पर्यावरण की गुणवत्ता को सतत् बनाये रखना है। यह इस बात की गारंटी देता है कि इससे पारिस्थितिकी तत्वों का किसी भी प्रकार से नुकसान नहीं होता। पारिस्थितिकी पर्यटन के अन्तर्गत पर्यटकों द्वारा प्राकृतिक क्षेत्रों की यात्रा इस उद्देश्य से की जाती, कि वह वहाँ जाकर प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक तत्वों की जानकारी प्राप्त करे तथा उन्हें किसी भी प्रकार से प्रदूषित या हानि न पहुँचाये। इसके विकास से पारिस्थितिकी के संतुलन को बढ़ाने में बल मिलता है। पारिस्थितिकी पर्यटन में प्राकृतिक तत्वों के साथ मित्रवत् व्यवहार किया जाता है।

पारिस्थितिकी पर्यटन के अंग

पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास में– पर्यटन स्थल, परिवहन एवं आवासीय सुविधाएँ आदि तीन अंग आधार प्रस्तुत करते है। पर्यटन स्थलों में पर्यटकों की वृद्धि इन तीन तत्वों के विकसित होने का परिणाम होती है।

किसी भी पारि–पर्यटन स्थल में प्राकृतिक आकर्षण जैसे– वन एवं वन्य जीव, जल एवं जलीय जीव स्त्रोत, सुहावना मौसम, प्राकृतिक खूबसूरती आदि तत्वों की उपस्थिति मुख्य कारक हैं। इसके अलावा सांस्कृतिक विविधता तथा ऐतिहासिक धरोहरों की उपस्थिति भी आमोद–प्रमोद का मुख्य कारण है। उक्त तीनों आकर्षण पारिस्थितिकी पर्यटन उद्योग के मुख्य स्त्रोत होते है। चित्रकूट इन तीनों दृष्टि से एक अनुपम उदाहरण है।

परिवहन सुविधाएँ पर्यटन स्थल एवं पर्यटकों के बीच सेतु बनकर पर्यटन स्थल को जीवन्तता प्रदान करती है। कोई भी पर्यटन स्थल कितना भी खूबसूरत क्यों न हो, बिना उसके विकास के पर्यटन वृद्धि की कल्पना असम्भव है। चित्रकूट रोड एवं रेल मार्ग द्वारा चारों दिशाओं से जुड़ा हुआ है। लेकिन यहाँ हवाई मार्ग का अभाव विदेशी आगन्तुओं की संख्या को कम करता है।

तीसरा महत्वपूर्ण आधार आवासीय सुविधाएँ हैं। इन्हें पर्यटन उत्पाद माना जाता है। आवासीय सुविधाएँ जितनी सस्ती और स्वच्छ होगी, उतना पर्यटकों को आकर्षित करती है।

उक्त के अतिरिक्त स्थानीय लोगों की मिलनसार शैली एवं पर्यटकों के प्रति व्यवहार, साहसिक पर्यटन, चिकित्सा, सुरक्षा, स्वच्छता एवं व्यापक प्रचार–प्रसार भी महती भूमिका अदा करते है।

चित्रकूट धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में प्राचीन समय से विकसित रहा है। आज समय के बदलते स्वरूप एवं पर्यटकों की मांग के अनुसार इसके बेसिक आधारभूत तत्वों में परिवर्तन एवं वृद्धि करना आवश्यक हो गया है।

चित्रकूट में पारिस्थितिकी पर्यटन क्यों?

1. स्थानीय उद्यमिता को प्रोत्साहन देना।
2. रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना।
3. स्थानीय लोगों के साथ संवाद में वृद्धि।
4. जैव विविधता का संरक्षण।
5. प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन।
6. सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण।
7. स्थानीय कला, उत्पाद एवं संस्कृति प्रचार–प्रसार में वृद्धि।
8. पारिस्थितिकी पर्यटन की संकल्पना को जन साधारण तक पहुँचाना।
9. स्थानीय संस्कृति के संरक्षण को बढ़ावा देना।
10. समीपवर्ती जंगल में बहुमूल्य जड़ी बूटियों– ब्रम्ही, सफेद मूसली, हथजोड़ी, जटाशंकरी, अश्वगंधा, मधु, हर्रा–बहेड़ा, चिरौंजी, तेन्दूपत्ता, रामराज गेरू, बिदारकंद आदि का उचित प्रबंधन तथा औषधि निर्माण।

भारतीय राज्यों में पर्यटकों के आगमन की स्थिति (2012 के अनुसार)

क्र.	राज्य	विदेशी पर्यटक मिलियन (2012)	मध्यप्रदेश का योगदान
1	आन्ध्रप्रदेश	207	0.02
2	तमिलनाडु	188	0.13
3	उत्तरप्रदेश	170	0.06
4	कर्नाटक	95	0.69
5	महाराष्ट्र	71	1.16
6	मध्यप्रदेश	53	0.32

स्त्रोत : भारतीय सांख्यकीय पर्यटन मंत्रालय, भारत 2012

उक्त सारणी में मध्यप्रदेश की स्थिति 6वें स्थान पर है। जबकि यहाँ 09 राष्ट्रीय उद्यान, 25 अभ्यारण, 03 वन्य जैव संरक्षित क्षेत्र, तथा वन, खनिज, प्राकृतिक खूबसूरती आदि से भरा–पूरा है। लेकिन यह अपनी पूरी क्षमताओं का लाभ नहीं उठा पा रहा है। पर्यटकों की मांग के अनुरूप, आज पर्यटन स्थलों को प्राकृतिक सुन्दरता बढ़ाने की जरूरत है। जहाँ पर्यटक प्राकृतिक तत्वों को निहार व अनुभव कर सके तथा शान्ति व सुकून के दो पल बिता सके।

चित्रकूट में पर्यटकों की स्थिति (2005–2008)

2005		2006		2007		2008	
घरेलू	विदेशी	घरेलू	विदेशी	घरेलू	विदेशी	घरेलू	विदेशी
2673847	460	3242200	198	6095835	499	9142009	664

स्त्रोत : एम.पी.टी.डी.सी., 2008

उपरोक्त तालिका का विश्लेषण करने पर निष्कर्ष निकलता है कि घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करने में यह पर्यटन स्थल अधिक कामयाब रहा है, जिसका कारण धार्मिक मान्यता तथा भगवान राम के प्रति आस्था रही है। विदेशी पर्यटकों की कमतर स्थिति यह दर्शाती है कि प्राकृतिक खूबसूरती का प्रबंधन पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से नहीं किया गया। पर्यटन स्थलों में बहुत बड़ा पुर्नउद्धार न करना तथा आधारभूत बुनियादी सुविधाएं उच्च स्तरीय न होना भी इसके कारणों में शामिल है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. चित्रकूट में पारिस्थितिकीय पर्यटन के वर्तमान परिदृश्य को समझना।
2. चित्रकूट में पारिस्थितिकीय पर्यटन से सम्बन्धित वर्तमान समस्याओं को जानना।
3. चित्रकूट में पारि–पर्यटन के सुधार एवं उन्नति के लिए सुझावों को तैयार करना।

शोध विधि

यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन विविध स्त्रोतों के माध्यम से किया गया है जैसे– अप्रकाशित शोध प्रबंध, प्रकाशित पुस्तकों, शोध पत्रों, मैगजीन्स, जर्नल आदि। पर्यटक सम्बन्धी आंकड़ों का एकत्रीकरण म.प्र. पर्यटन विभाग भोपाल, जिला सांख्यिकीय कार्यालय सतना एवं समाचार पत्रों से किया गया है। वैयक्तिक अनुभव के आधार पर आंकड़ों का विश्लेषण कर उनका तुलनात्मक अध्ययन कर वर्णन किया गया है।

चित्रकूट में पारि–पर्यटन आकर्षण के केन्द्र

कामदगिरि

चित्रकूट कोई एक पर्यटन स्थल नहीं है, यहाँ छोटे–छोटे एवं भगवान राम से जुड़े पर्यटन स्थल कई दिशाओं में फैले हुए है। उन सभी पर्यटन स्थलों में कामदगिरि मुख्य है। कामदगिरि का अर्थ 'एक पहाड़ी' या 'पर्वत' है। यह पहाड़ी 5 कि.मी. व्यास में फैली हुई है। जिसके चारों तरफ एक परिक्रमा पथ है। पहाड़ी में हरियाली बिल्कुल कम है। पेड़–पौधों की संख्या मौखिक गिनी जा सकती है। बीच–बीच में चट्टाने पेड़ों से ऊपर निकलती हुई दिखाई पड़ती है। पहाड़ी के चारों तरफ सांस्कृतिक संरचना इतनी हावी हो गई है कि पहाड़ी का स्वरूप सिमटता हुआ प्रतीत हो रहा है। वनस्पति अभाव के कारण वन्य जीव की संख्या नगण्य है। लाल एवं काले बन्दर इस पहाड़ी को अपना आश्रय बना लिया है।

ऐसा माना जाता है कि भगवान राम का दूसरा नाम कामदगिरि था। जो अपने चौदह वर्षों के वनवास के दौरान लगभग 11 वर्ष यहाँ व्यतीत किये। इस कारण इस पहाड़ी का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। यहाँ आने वाला हर पर्यटक इस पहाड़ी की परिक्रमा करना चाहता है तथा इसके महत्व को समझना चाहते हैं।

रामघाट

यह यहाँ का दूसरा महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है, जो मंदाकिनी नदी के किनारे स्थित है। जैसा कि इसके नाम से विद्रित है, भगवान राम, लक्ष्मण एवं सीता यहीं पर अपने वनवास के समय में स्नान किया करते थे। हर पर्यटक यहाँ आकर स्नान करना चाहता है तथा इस स्थान को देखना चाहता है। अमावस्या, खासकर सोमवती अमावस्या, दीपावली, शरदपूर्णिमा, मकर संक्रांति, रामनवमी आदि को यहाँ हजारों लोग आकर स्नान करते है। इसके प्रसिद्धि का दूसरा महत्वपूर्ण कारण यह भी माना जाता है कि तुलसीदासजी ने रामचरित मानस की रचना इसी स्थान पर बैठकर की थी। इस स्थान का आनन्द, यहाँ पर उपलब्ध नाव के माध्यम से भी लिया जा सकता है।

गुप्त गोदावरी

यह रामघाट से पश्चिम में लगभग 18 कि.मी. की दूरी में पहाड़ी में स्थित प्राकृतिक गुफाएँ है। यहाँ एक–दूसरे से जुड़ी हुई दो गुफाऐं पायी जाती है जिसका निर्माण भूमिगत जल अपरदन से माना जाता है। आज भी इन गुफाओं की तली में जल प्रवाहित होता रहता है। प्रकृति की अद्भुत रचना का यह अद्भुत नमूना, पर्यटकों की रोचकता व आकर्षण का रहस्य है। गुफा के अन्दर बनी हुई प्राकृतिक बेल–बूटे तथा आकृतियां सौन्दर्य का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती है।

हनुमान धारा

यह स्थल रामघाट से 5 कि.मी. दूरी पर विन्ध्य पर्वत श्रेणी पर स्थित है। यहाँ पर पहुँचने के लिए 650 सीढ़ियों को पार करना पड़ता है। पर्वतारोहण की आसीम संभावनाऐं है यहाँ। हरी–भरी वादियों के बीच में स्थित यह स्थल, यहाँ एक विशाल हनुमान मंदिर है, जिसके बगल से हनुमान धारा नामक जल प्रपात प्रवाहित होता है। पारिस्थितिकी पर्यटन के साथ ही साहसिक पर्यटन के अनेक आयाम यहाँ विकसित किये जाने की संभावनाएँ है।

जानकी कुण्ड

यह कुण्ड बड़ा ही मनमोहक है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि अपने वनवास के दौरान प्रतिदिन सीता जी यहाँ स्नान करती थी, इसीलिए इसका नाम जानकी कुण्ड पड़ा। क्योंकि यहाँ की चट्टानों में आज भी पैर के निशान पाये जाते है। चारों तरफ प्राकृतिक हरियाली, कुण्ड का गहरा नीला पानी जल की कलरव ध्वनि बर्बस ही मन को मोह लेती है।

लक्ष्मण पहाड़ी

भगवान राम की शयनगाह, इसे माना जाता है। जिनके सुरक्षा की पूरी जबावदारी लक्ष्मण द्वारा किये जाने के कारण इसका नाम 'लक्ष्मण पहाड़ी' रखा गया। इसको सीढ़ियों के द्वारा कामदगिरि मुख्य परिक्रमा पथ से शिखर भाग को जोड़ा गया है। पहाड़ी के ऊपर जंगली जीवों को फेंसिंग के द्वारा सुरक्षित किया गया है। जहाँ पर्यट इनको नजदीक से निहार सकते हैं। यहाँ पर एक कुँआ, जिसमें हमेशा पानी भरा रहता है, आकर्षण का केन्द्र है। पहाड़ी को पारि–पर्यटन की दृष्टि से विकसित कर और अधिक आकर्षक और हरा–भरा बनाया जा सकता है तथा साहसिक क्रियाएं जैसे– ट्रेकिंग, पर्वतारोहण आदि विकसित की जा सकती है।

चित्रकूट के अन्य पर्यटन स्थल

चित्रकूट में भगवान राम की गाथा गाते हुए अनेक पर्यटन स्थल कई किलोमीटर में इधर–उधर स्थिति है। जो अपनी खूबसूरती को संजोए हुए पर्यटकों के दर्शनार्थ खड़े हुए हैं। जैसे– सिरसा वन, मडफा किला, विराध कुण्ड, सूर्यकुण्ड, स्फटिक शिला, प्रमोद वन, अरोग्य धाम, पीली कोठी, भरतकूप, गनेश बाग, सरभंग आश्रम, सुतीक्ष्ण आश्रम, वालमीकी आश्रम, राजापुर, सीतापुर, शबरी जल प्रपात, हनुमान धारा जलप्रपात, चित्रकूट जलप्रपात।

रामघाट से चित्रकूट के विविध पर्यटन स्थलों की दूरी

क्र.	स्थल	दूरी (कि.मी.)
1	जानकी कुण्ड	02
2	हनुमान धारा	03
3	गुप्तगोदावरी	18
4	सती अनुसुइया	16
5	भरतकूप	20

चित्रकूट में नवीन पारि–पर्यटन के विविध आयामों के विकास की सम्भावनाएँ

नित नवीन बढ़ते हुए पारि–पर्यटन एवं इसके विविध आयामों की यहाँ पर विकसित करने की असीम संभावनाएँ है। इन्हें साहसिक पर्यटन के नाम से जाना जाता है। विभिन्न राज्य एवं देश इन क्रियाओं को अपना कर पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता में वृद्धि कर रहे है। चित्रकूट में निम्नलिखित क्रियाओं के बढ़ने की आसीम संभावनाएं हैं–

वायु से सम्बन्धित क्रियाएँ ↓	स्थल से संबंधित क्रियाएँ ↓	जल से संबंधित क्रियाएँ ↓
→ बैलूनिंग → हेंग ग्लाइडिग	→ ट्रेकिंग → पर्वतारोहण → रॉक क्लाइबिंग → सफारी → कार रैली → गोल्फ → पगडण्डी/पैदल	→ पैरा शेलिंग → नौका दौड़ → तैराकी → फिशिंग → वाटर राफ्टिंग

उक्त क्रियाओं हेतु निम्न सावधानियाँ आवश्यक हैं–

1. कुशल प्रशिक्षक
2. पूर्णतः स्वस्थ पर्यटक
3. सुव्यवस्थित यंत्र
4. स्वास्थ्य सुविधाएँ
5. निजी एवं शासकीय सहयोग

पारिस्थितिकी पर्यटन का उद्देश्य सिर्फ पर्यटन स्थलों का आनन्द लेना नहीं बल्कि पर्यटकों को प्राकृतिक

तत्वों के संरक्षण का महत्व भी बताना है। इसमें प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों से भी अवगत कराना है। इसमें स्थानीय निवासियों, व्यापारियों को आर्थिक लाभ के साथ ही साथ वनस्पति तथा वन्य जीवों के संरक्षण को बढ़ावा मिलता है।

चित्रकूट का टूर पैकेज प्रोग्राम

1. सतना– चित्रकूट– खजुराहो– पन्ना राष्ट्रीय उद्यान– धुबेला म्यूजियम– ओरछा, ग्वालियर।
2. चित्रकूट– सतना– बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान– अमरकंटक– कान्हा राष्ट्रीय उद्यान– पंचमढ़ी– भेड़ाघाट (जबलपुर)।

निष्कर्ष

अपने अध्ययन के दौरान पाया कि चित्रकूट बहुत ही खूबसूरत पर्यटन स्थल है। छोटे–छोटे पर्यटन स्थल चारों दिशाओं में फैले हुए हैं, जो प्रकृति के बीच में अठखेलियाँ करते हुए प्रतीत हो रहे है। लेकिन लगातार बढ़ते पर्यटन के दबाव से पारिस्थितिकीय तत्व सिकुड़ते जा रहे हैं। आज का पर्यटक प्राकृतिक तत्वों की विविधता के बीच अपने आप को देखना चाहता है। जो यहाँ पर बहुतायत मात्रा में पाये जाते है। सांस्कृतिक विकास एवं जनसंख्या का अत्यधिक दबाव प्राकृतिक तत्वों की जगह पैर पसार रहा है। प्राकृतिक तत्वों के कम बोध तथा भविष्य में इनकी जरूरत को प्राथमिकता के अनुसार विकसित नहीं करना इस पर्यटन स्थल की सबसे बड़ी समस्या रही है।

समस्याएँ

यद्यपि चित्रकूट सदियों से जनसमुदाय की धार्मिक भावनाओं का आधार रहा है। यहाँ वर्ष में बारह महीनों में स्थानीय तथा कई किलोमीटर से लोग अमावस्या के दिन आते है। लेकिन जब मैं इसको एक पारि–पर्यटन केन्द्र के रूप में देखता है तो निम्न प्रकार की समस्यायें मेरे मस्तिष्क में आती हैं–

1. मानवीय समुदाय द्वारा लगातार प्राकृतिक संसाधनों पर अतिक्रमण, धीमी गति से लेकिन सतत्।
2. लगातार जैव–विविधता में कमी।
3. जनसंख्या द्वारा सांस्कृतिक हस्तक्षेप के माध्यम से जलस्त्रोतों पर अतिक्रमण।
4. जल प्रदूषण।
5. सुरक्षा अव्यवस्था।
6. पारिस्थितिकीय पर्यटन के रूप में विकसित करने में स्थानीय लोगों में अरूचि एवं कम जागरूकता।
7. तीव्र एवं लगातार यातायात की कमी।
8. अनियोजित विकास एवं कचरे के प्रबंधन की सुनियोजित व्यवस्था न होना।

सुझाव

1. पारि–पर्यटन के सतत् विकास के लिए आधारभूत संरचना का विकसित होना बहुत जरूरी है। रोड़, रेल, हवाई यातायात के अलावा स्वास्थ्य सुविधाएँ, सुरक्षा, स्वच्छ पानी एवं ठोस कचरे का प्रबंधन होना भी जरूरी है। उक्त सुविधाएँ किसी भी पर्यटन केन्द्र को गति प्रदान करती है।
2. चित्रकूट में पारिस्थितिकी पर्यटन को विकास के लिए स्थानीय समुदाय की सहभागिता मील का पत्थर साबित हो सकती है। बशर्ते लालची प्रवृति एवं व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर, प्राकृतिक तत्वों को उपभोग की वस्तु न माना जाय।
3. स्थानीय लोगों की मदद से साहसिक पर्यटन जैसे– ट्रेकिंग, जलक्रीड़ा, रिवरराफ्टिंग, राइडिंग, रॉक क्लाइविग, पैराग्लाइडिंग, एनीमल सफारी जैसे पर्यटक आकर्षक क्रियाओं को कामदगिरि, हनुमानधारा, जानकीकुण्ड, लक्ष्मण पहाड़ी, देवांगना पर्वत एवं पहाड़ियों जैसे विविध स्थानों में विकसित कर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।
4. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं प्रबंधन पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।
5. पारि–पर्यटन की वृद्धि हेतु चित्रकूट पर्यटन केन्द्र में राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य विकसित करने की महती आवश्यकता है। जिससे यहाँ की प्राकृतिक खूबसूरती को अक्षुण्य बनाये रखा जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अनुरागी, राज बहादुर (2006), ''बघेलखण्ड में पारि–पर्यटन'' अप्रकाशित शोध प्रबंध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)*
2. *अनुरागी, राज बहादुर (2002), ''सतना जिले के भूदृश्यों का पर्यटन पर प्रभाव'' अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)*
3. *बन्सल, सुरेश चन्द्र (2006), ''पर्यटन एवं यात्रा प्रबन्धन, आधारभूत सिद्धांत'' मीरा प्रकाशन, सराहनपुर।*
4. *स्थापक, मधु (2016), ''पर्यावरण एवं पर्यटन'', कृष्णा कम्प्यूटर, सागर (म.प्र.)।*

5- *https://holiday.com/places/chitrakoot/sishteeing_and_things_to_do_html. assessed on 11.12.2017.*

6- *https://satna.nic.in/chitrakoot/pdf.assessed on 11.12.2017*